
CBSE Class 12 हिंदी ऐच्छिक

पुनरावृत्ति नोट्स

पाठ-2

(क) गीत गाने दो मुझे

गीत गाने दो पिफर सीचने को।

मूल भाव - इस कविता में कवि ऐसे समय की ओर संकेत कर रहा है जब हर ओर निराशा ही निराशा ही निराशा व्याप्त है। वह निराशा में आशा का संचार करना चाहता है।

व्याख्या बिन्दु:- कवि कहता है कि जीवन में निरंतर बढ़ती हुई पीड़ा अथवा दुःख को कम करने के लिए, उसे भुलाने के लिए उसे गीत गाने दो। गीत हृदय की अनुभूतियाँ हैं। ये वेदना की तीव्रता को भुला सकते हैं, दुःखों को कम कर सकते हैं। जीवन-मार्ग पर चलते हुए हर कदम पर चोट खाते-खाते और संघर्ष करते-करते होश वालों के भी होश छूट गए हैं। अर्थात् अब जीना आसान नहीं रह गया है। जीने के लिए जो भी था, मूल्यवान था, उसे छल-कपट से उन मालिकों ने रात के अंधकार में संकट के समय लूट लिया, जिन पर भरोसा था। अब पीड़ा सहते सहते कंठ रुकने लगा है, ऐसा लगता है कि सामने काल आ रहा है। अब जीना कठिन हो गया है। लोग कुछ कह नहीं पा रहे हैं। इस निराशा भरे वातावरण में कवि गीत गाना चाहता है ताकि व्यथा को रोका जा सके। कवि कहता है कि संसार हार मानकर स्वार्थ और अविश्वास के जहर से भर गया है। संसार से सहानुभूति, करुणा, उदारता, सहयोग, भाईचारा, आदि भावनाएँ लुप्त हो चुकी हैं। अब लोग आपस में एक दूसरे को अपरिचित निगाहों से देख रहे हैं। मानवता हाहाकार कर रही है। लोगों में जीने की इच्छा मर चुकी है। संसार में एकता, समता, सहानुभूति तथा प्रेम की लौ बुझ गई है। कवि मानवता की बुझती लौ को पिफर से जलाने के लिए स्वयं जलना चाहता है। वह ऐसे गीत गाना चाहता है जो संसार में प फैली निराशा में आशा का संचार कर सके।

(ख) सरोज-स्मृति

देखा विवाह तेरा तर्पण।

मूल भाव :- 'सरोज स्मृति' कविता कवि निराला की दिवंगत पुत्री पर केंद्रित है। इस कविता के माध्यम से निराला का जीवन-संघर्ष एक भाग्यहीन पिता का संघर्ष, समाज से उसके संबंध तथा पुत्री के प्रति बहुत कुछ न कर पाने का अकर्मण्यता बोध भी प्रकट हुआ है।

कवि अपनी स्वर्गीया पुत्री सरोज को संबोधित करते हुए कहता है कि तेरा विवाह सभी प्रकार की रुढ़ियों से मुक्त सर्वथा नवीन पद्धति से हुआ था। विवाह के समय कवि माता-पिता दोनों के कर्तव्य निभा रहा था। कवि कहता है कि पवित्रा कलश के जल से तेरा स्नान कराया गया तब तू मुझे मंद मुस्कुराहट के साथ देख रही थी। ऐसा लगता था कि तेरे होंठों में बिजली की चमक पफंसी हो। तुम्हारे हृदय में पति की सुंदर छवि थी। यह बात तुम्हारे श्रृंगार में मुखरित हो रही थी। विवाह के समय तेरा विश्वास तेरे उच्चरारों के साथ-साथ अंग-अंग में झलक रहा था अर्थात् तू अपने विवाह के समय पूर्ण आश्वस्त तथा प्रसन्न दिखाई दे रही थी। लज्जा व संकोच से झुकी हुई तेरी आँखों में एक नया प्रकाश उभर आया था, तेरे होंठों पर स्वाभाविक कंपन था। उस समय मेरे वसंत की प्रथम गीति का प्यास उस मूर्ति में साकार हो उठी थी। कवि कहता है मैंने अपनी कविताओं में सौंदर्य के जिस निराकार भाव को अभिव्यक्त किया था, वह तुम्हारे रूप-सौन्दर्य में साकार हो उठा था।

कविताओं में वही रस की धरा बनकर प्रवाहित होता रहता था। शृंगार के जिस गीत को मैंने अपनी स्वर्गीय पत्नी के साथ मिलकर गाया था, वह आज भी मेरे प्राणों में अनुरागपूर्ण उत्साह का संचार कर रहा है। ऐसा लगता है कवि की पत्नी का आलौकिक सौन्दर्य आकाश से उतरकर पुत्री सरोज के रूप में पृथ्वी पर आ गया हो। तेरा रूप सौन्दर्य कामदेव की पत्नी रति के समान अवर्णनीय था। तेरा विवाह संपन्न हो गया। इस विवाह में कोई आत्मीय जन नहीं थे, न ही उन्हें कोई निमंत्रण भेजा गया था। विवाह अत्यंत सादगी के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह में रात्रि जागरण नहीं हुआ न ही विवाह गीत गाए गये, न कोई चहल-पहल हुई। सर्वत्रा एक मौन संगीत समाया हुआ था जो तुम्हारे नव जीवन में उतर आया था। कवि कहता है कि माँ के अभाव में मैंने तुझे वे सभी शिक्षाएँ दी जो माताएँ अपनी पुत्री को देती हैं। मैंने ही तेरी पुष्प सेज को भी तैयार की। उस समय कवि को कण्व ऋषि की पालित पुत्री शकुन्तला की याद आ गई वह भी माँ विहीन थी। किंतु उस घटना तथा यहाँ की स्थिति में अन्तर है। नानी की स्नेहमयी गोद में आ गई अर्थात् तू नानी के पास आ गई। मामा-मामी का भरपूर स्नेह मिला। उन्होंने तुझ पर स्नेह की वर्षा उसी प्रकार की जिस प्रकार बादल ध्रुती पर जल बरसाते हैं। वे सदा तेरे रक्षक और हित चिंतक बने रहे। वे सदा तेरे कामों में लगे रहे। तेरी माँ उस कुल की लता थी, जहाँ तू कली के रूप में खिली तथा पफली-पूफली तथा तेरा पालन-पोषण हुआ। अंत समय तू उसी गोद अर्थात् नानी की गोद में आ गई थी और तूने सदा-सदा के लिए मृत्यु का वरण कर अपनी आँखें मूंद ली थी। कवि कहता है कि मैं तो सदैव से भाग्यहीन था। तू ही मेरा एकमात्रा सहारा थी। युग के बाद जब तू मुझ से बिछुड़ गई तो दुःख मेरे जीवन की कथा बन गयी। मेरे जीवन में सदैव दुःख ही भरा रहा कभी सुख देखाने को नहीं मिला। जीवन में मिले दुःखो और अभावों के कारण कवि अपनी पुत्री के प्रति कर्त्तव्यों का पालन नहीं कर पाया। वह पश्चाताप करते हुए कहता है कि मेरे कवि कर्म पर वज्रपात हो जाए तब भी मेरा सिर श्रद्धा से झुका रहेगा। अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए मेरे समस्त सत्कार्य शीतकाल में पाला पड़ने से कमल की तरह नष्ट हो जाएं तब भी कोई चिंता नहीं है। मैं अपने विगत जीवन के सभी कार्यों का पफल तुझे अर्पित कर तेरा तर्पण कर रहा हूँ अर्थात् तेरा श्राद्ध कर रहा हूँ। तेरे प्रति यही मेरी श्रद्धांजलि है।
